उषा प्रियंवदा के कथा साहित्य मे नारी

प्रा.डॉ.व्ही.सी.ठाकुर

उषा जी की कहानियों में चित्रित नारियों के स्वरूप में एक नयापन हमें दिखाई देता है। उन पात्रों में एक प्रकार का आत्मविश्वास हमें दिखाई देता है। वे मानवीय संवेदना से ओतप्रोत है। उन पात्रों को स्वाभाविक अस्मिता के बदले और कुछ नहीं चाहिए। आत्मनिर्भरता को बनाए रखते हुए अपनी विशिष्ट पहचान बनाती है। उनकी कहानियों में नारियां सामाजिक दायित्व को निभाने वाली होती है। हर चुनौती को स्वीकार करने वाली साहसी नारी है। उषा जी ने नारी संघर्ष, आकांक्षा को संभावनाओं को अपनी रचनाओं में व्यापक स्वर देने की कोशिश की है। वस्तु स्थिति को उजागर किया है। इसमें उनकी गहरी सोच, जांच पड़ताल भी दिखाई देती है। स्वतंत्र्योत्तर काल में नारी चेतना को गति मिली है, नारी की अस्मिता को बचाने के लिए जिन महिला रचनाकारों ने योगदान दिया है, उनमें शिवानी, मृणाल पांडे, नमिता सिन्हा, प्रभा खेतान, मैत्रेई पुष्पा, ममता कालिया, कृष्णा सोबती, मानसी जोशी, मृदुला गर्ग, मेहरून्निसा परवेज, निरुपमा सोबती, राजी सेठ, उषा प्रियंवदा आदि है। एक जगह उषा जी ने अपना परिचय देते हुए लिखा है कि," मेरा जीवन एक पुस्तक है, जिसमें एकदम कुछ खुला है और कुछ गोप्य है जो मेरा प्राप्य और संचित पूंजी है। जो मेरी प्रेरणा का स्रोत है और उत्स है। पर जब यह कहानी या उपन्यास के माध्यम से पृष्ठों पर निखरता हैं तब इतना बदला हुआ है कि उसमें मेरा कुछ भी अंश नहीं होता। शायद आत्मकथा और गल्प में यही अंतर होता है। जीवंत अनुभवों, भावनाओं, विचारों अनुभूतियों के एक पतले से तंतुओं को लेकर एकदम नया संसार गढ़ सकना उसी तरह–तरह के चरित्रों से आबाद करना, इसी में मेरी वास्तविकता है, प्रेरणा और कल्पना का मिश्रण है।"

उषा जी ने नारी को सचेत करते हुए वास्तविक जीवन मूल्यों की खोज का मार्ग प्रशस्त किया है। उन्होंने नारी के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास को राह में उपयोगी एवं बाधक तत्वों को परख करते हुए नारी अस्मिता के संभावित सृजनात्मक आयामों की प्रखरता से तलाश की है। लेखिका नए मूल्यों एवं संदर्भों को अपनी नायिकाओं के माध्यम से समाज के सामने लाना चाहती है। जिंदगी और गुलाब के फूल में 'नारी पुरुष संबंधों की जटिलताओं और कुंठाओं की उन्मुक्त भाव से अभिव्यक्ति हुई है। उषा जी की नायिकाएं प्रेम को जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अनुभव मानती है। अनेकों कहानियों में नारी शिक्षित तो है ही उनमें समाज की रूढ़ियों से हटकर काम करने की लालसा है। यह लालसा सामाजिक वर्जनाओं के बीच दम तोड़ देती है।

संवादों की सुंदर व्यंजना उषा जी की विशेषता रही है। भाषा अत्यंत सीधी, सरल, नाट्यपूर्ण, पात्रानुकूल स्वाभाविक दिखाई देती है । सारे तत्वों के होते हुए भी देश काल तथा वातावरण का चित्रण उनकी कहानियों का उद्देश्य है। सार्थक शीर्षक होते हैं, सभी तत्वों की कसौटी पर उनकी सफलता दिखाई देती है। नारी जीवन उनके कथा साहित्य का केंद्र बिंदु रहा है, आज की बदलती हुई परिस्थितियों में स्त्रियों की बदलते हुए अनुभवों को कहानी की केंद्रीय समस्या बनाकर उन्होंने लिखा है। उषा जी की कहानियां एक अलग प्रकार का जीवन हमारे सामने प्रस्तुत करती है। आरंभ से अंत तक एक नारी छाई रहती है। सभ्य एवं सुशिक्षित, नौकरीपेशा, विवाहिता होने के नाते उन्होंने इस प्रकार की स्त्रियों की समस्याओं का चित्रण किया है। साथ ही साथ समाज में प्रचलित समस्याओं का चित्रण किया है। उषा जी ने उनके प्रति मनुष्य को सचेत करने का प्रयास किया है। कहानियों के कथानक अत्यंत छोटे हैं। विषय घरेलू है। पारिवारिक समस्याएं, आर्थिक समस्याएं, नारी विषयक समस्याएं अधिक रूप में चित्रित है। हर स्थिति

को मनोविश्लेषण द्वारा उन्होंने सफलतापूर्वक रचनाओं को उजागर किया है। उषा प्रियंवदा ने मुख्य रूप से शहरी जीवन को देखा–परखा और चित्रित किया है। 1930 में कानपुर के मध्यवर्गीय परिवार में जन्मी इलाहाबाद विश्वविद्यालय से अंग्रेज़ी में एम.ए.किया, पीएचडी किया दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज में 3 वर्षों तक अध्यापन किया। उपरांत अमरीका में प्रोफेसर बन गई। कोई स्त्री पिता और पति का मूल नाम क्यों जोड़े? मां का नाम क्यों नहीं जोड़ें? उषा जी ने जोड़ा। दुनिया बदलने का अपना–अपना तरीका होता है। एक तरीका यह भी होता है, देखने में यह छोटी–सी बात लगती है। लेकिन नहीं इसके पीछे एक दृष्टिकोण, यही दृष्टिकोण पूछा कि लेखन का वैचारिक आधार है। उनका पहला उपन्यास पचपन खंभे लाल दीवारें 1961 में आया यह निम्नवर्गीय परिवार में संबंध सुषमा नाम की एक ऐसी लड़की की कहानी है जो अपने ही अंदाज में संघर्ष कर रही है। शहरी मध्यमवर्गीय परिवारों में स्त्री की नियति विवाह, पति, दीवार बच्चों और पहनावे – दिखावे तक सिमटी होती थी। लेकिन सुषमा अलग है परिवार की बड़ी बेटी का दायित्व बोलती नहीं है दूसरा उपन्यास रुकोगी नहीं राधिका पिता की इच्छा बेटी अपने पास रहे, बेटी का मन कहीं नहीं लग रहा । वह सीधे फैसला सुनाती है,'' नहीं पापा, मैं जाना चाहती हूं, मनीष––मेरे एक बंधु ।'' बाज बीच में छोड़कर वह रुक जाती है। और पिता कुछ और हताश महसूस करने लगे, वह कुशन की टेक लगा कर बैठ जाते हैं, इसी के साथ उपन्यास की समाप्ति है, तीसरी उपन्यास शेष यात्रा में अनु नामक लड़की जो माता–पिता विहीन है। प्रवासी भारतीयों का अपना एक संसार है। भारतीय समाज में स्त्री अपनी समग्रता में पहली बार बांग्ला लेखक शरतचंद्र के उपन्यासों में आती है। उनकी स्त्री पात्रों ने हिंदी भाषी समाज को खूब प्रभावित किया। ध्यान से देखिए तो शरद बाबू की समस्या भी वही थी, जो उषा प्रियंवदा की है।

प्रवासी जीवन के प्रभाव को स्त्री जीवन में देखना उषा जी के कथा साहित्य की दूसरी खासियत है उषा जी ने अपनी कहानियों में समाज की समसामयिक समस्याओं की गहराई में उतरकर अपनी सूक्ष्म दृष्टि से उनकी नब्ज टटोलते हुए व्यक्ति के जीवन से जुड़ी समस्याओं को उजागर किया है। उन्होंने नारी जीवन में आने वाले परिवर्तनों को बखूबी से परखा है। इनकी कहानियों में स्त्री स्वतंत्रता के मानदंड विभिन्न रूपों में परिलक्षित होते हैं। उषा प्रियंवदा की उत्कृष्ट कहानी वापसी में परिजनों की आधुनिक भौतिकवादी स्वच्छंद जीवन दृष्टि तथा घोर व्यक्तिवादी जीवन दर्शन के कारण गजाधर बाबू का सपना दिवास्वप्न प्रतीत होता है।

पत्नी की उपेक्षा सह नहीं पाते, पत्नी का साथ चाहने वाले व्यक्ति पर जब ऐसा होता है तो मानवीय संवेदनायें चूर–चूर होकर बिखर जाते हैं। उषा प्रियंवदा ने स्त्री की इच्छा कामना और तुरंत निर्णय लेने के प्रश्नों को विभिन्न दृष्टिकोण से अपनी कहानियों में चित्रित करने का प्रयास किया है।

संदर्भ–

1. मेरी कहानियां उषा प्रियंवदा–स.डॉ.निर्मला जैन
2. जिंदगी और गुलाब के फूल–उषा प्रियंवदा
3. कितना बड़ा झूठ–उषा प्रियंवदा
4. शून्य तथा अन्य रचनाएं–उषा प्रियंवदा
5. एक कोई दूसरा–उषा प्रियंवदा
6. रुकोगी नहीं राधिका–उषा प्रियंवदा
7. पचपन खंभे लाल दीवारें–उषा प्रियंवदा
8. शेष यात्रा–उषा प्रियंवदा